—: 07 से 12वीं शताब्दी में समाज व संस्कृति :—

वास्तुकला →

→ हिमालय से विंध्यांचल तक शैली → नागर शैली

→ विंध्यांचल से कृष्णा नदी तक शैली → बेसर शैली

→ कृष्णा नदी से कन्याकुमारी तक शैली → द्राविड़ शैली

→ नागर शैली → चतुष्कोणीय मंदिर, कोणाकार शिखर

→ बेसर शैली → अर्द्धगोलाकार मंदिर

→ द्राविड़ शैली → अष्टभुजाकार मंदिर, पिरामिडिय शिखर

→ शिखर के शीर्ष पर ग्रीवा के ऊपर षटकोणीय पत्थर होता है जिस पर कलश रखा होता है उसे "द्राविडी/स्तूपी" कहते है।

→ गर्भग्रह → जहाँ देव प्रतिमा स्थापित होती है।

→ प्रदक्षिणा पथ → जहाँ परिक्रमा की जाती है।

→ गोपुरम → मुख्य प्रवेश द्वार

→ द्राविड़ कला का सर्वश्रेष्ठ नमूना → "राजराजा चौल" द्वारा "तंजौर" में निर्मित "राजराजेश्वर / बृहदेश्वर मंदिर"

- यह शिव मंदिर है।
- यहाँ भारत का सबसे बड़ा "नंदी बैल" लगा हुआ है।
- पर्सी ब्राउन ने 'राजराजेश्वर मंदिर' को द्राविड़ कला की सर्वोत्तम कृति तथा भारतीय वास्तुकला की कसौटी बताया है।

→ विशेषताएँ →

(1) चौल शैली → विमान

(2) पल्लव शैली → मंडप

(3) पांड्य शैली → गोपुरम

HB Choudhary - Mobile Apps

Scanned by CamScanner

1\. पल्लव शैली →

\- पर्सी ब्राउन ने पल्लव शैली को 04 भागो में बाँटा है –

(1) महेन्द्र वर्मन शैली →

- विकास → महेन्द्र वर्मन के समय
- पहाड़ो को काटकर गुफा मंदिरों का निर्माण किया गया जिन्हे 'मंडप' कहा जाता है।

(2) महामल / मामल शैली →

- विकास → नरसिंह वर्मन I के समय
- "महाबलिपुरम (तमिलनाडू)" मे चट्टानो को काटकर एकाश्मक रथ मंदिरो का निर्माण हुआ।
- ये संख्या मे 08 है। इन्हे "सप्त पैगोड़ा" कहते हैं।
- ये शिव मंदिर है। इन पर 'नरसिंह वर्मन' की मूर्ति बनी हुई है।
- 08 मंदिर →
  - (1) गणेश रथ
  - (2) धर्मराज रथ → सबसे बड़ा रथ
  - (3) भीम रथ
  - (4) अर्जुन रथ
  - (5) नकुल-सहदेव रथ
  - (6) द्रोपदी रथ → सबसे छोटा रथ
  - (7) वल्लैयंकट्टैरथ
  - (8) पिडारी रथ

(3) राजसिंह शैली →

- विकास → नरसिंह वर्मन II के समय
- ईंट-पत्थरो से ईमारती मंदिरो का निर्माण हुआ
- मंदिर →
  - (1) महाबलिपुरम का शोर मंदिर
  - (2) कांची (तमिलनाडू) का →
    - (i) कैलाशनाथ मंदिर
    - (ii) बैकुंठ पेरुमाल मंदिर

Scanned by CamScanner

30

(5) अपराजित शैली →
- विकास → नंदी वर्मन के समय
- छोटे मंदिरो का निर्माण हुआ
- कांची का "मुक्तेश्वर मंदिर"

मूर्ति शिल्प →

1. गांधार कला (हेलिनिस्टिक आर्ट) →
→ कलाकार → यूनानी
→ कला के विषय → भारतीय
→ इसमे बुद्ध तथा बोधिसत्व की मूर्तियाँ बनी है।
→ जैन तथा हिन्दू मूर्तियों का अभाव है।
→ बुद्ध प्रथम मानव है जिनकी मूर्ति बनाकर पूजा की गई।
→ स्लेटी पत्थर की मूर्तियाँ बनी।
→ बुद्ध यूनानी देवता अपोलो की तरह दिखाई देते है।
→ इसमे मांसलता का प्रदर्शन है तथा शारीरिक सौष्ठव का प्रदर्शन है।
→ अध्यात्म का अभाव है।
→ यथार्तवादी अंकन अधिक है।
→ सिर्फ गांधार शैली मे महात्मा बुद्ध की मूँछे बनाई गई है।
→ सिर्फ गांधार शैली मे बुद्ध को घुटने तक जुते पहने दिखाया गया है।
→ गांधार शिल्प मे बुद्ध की "पदमासन" प्रतिमा बनी है।

HC Choudhary - Mobile Apps

Scanned by CamScanner

2. मथुरा शिल्प →
→ लाल बलुआ पत्थरों की प्रतिमाएँ

→ हिन्दू तथा जैन प्रतिमाएँ अधिक

→ आध्यात्मिक सौन्दर्य पर बल

→ बुद्ध की प्रतिमाएँ "सिंहासन" अवस्था में हैं।

→ मथुरा में बिना सिर की कनिष्क की पाषाण प्रतिमा मिली है जिस मे जूते, बेल्ट तथा ओवरकोट बना हुआ है।

3. अमरावती कला →
→ आंध्रप्रदेश में कृष्णा नदी के किनारे स्थित

→ सफेद संगमरमर का प्रयोग मूर्तियों में

→ यहाँ चैत्य (बौद्धो के पूजा स्थल) तथा विहार (निवास स्थान) अधिकता से बने हैं।

→ अमरावती में सघन प्रकृति का अंकन अधिक हुआ है।

→ अमरावती कला में बुद्ध को प्रतिकों के माध्यम से दर्शाया गया है।

सामाजिक दशाएँ →
→ आर्थिक सम्पन्नता का युग

→ स्त्रियों की दशा में काफी गिरावट आई —
— सती प्रथा का प्रचलन
* — सती प्रथा का प्रथम उल्लेख गुप्त सम्राट भानुगुप्त के 'एरण अभिलेख' मे मिलता है।
— भानुगुप्त के सेनापति गोपराज के शहीद होने पर उसकी पत्नी सती हुई।
— हर्षवर्द्धन की माता यशोमती सती हुई थी।

HG Choudhary - Mobile Apps

Scanned by CamScanner

- बहु विवाह प्रथा प्रचलित
- पर्दा प्रथा प्रचलित
- त्याग प्रथा प्रचलित
- डावरिया प्रथा प्रचलित (विवाह के समय दास-दासियाँ भेजी जाती थी)
- राक्षस विवाह प्रचलित (अपहरण करके विवाह) की परम्परा थी।
- → ब्राह्मणो को "कर मुक्त दान" (अग्रहार (ब्रह्मदेय)

मंदिर →

	मंदिर	स्थापत्य शैली	निर्माता
1.	लिंगराज मंदिर (भुनेश्वर)	नागर शैली	—
2.	जगन्नाथ मंदिर (उड़ीसा)	नागर शैली	अनंत वर्मा
3.	कोणार्क सूर्य मंदिर (ब्लैक पैगोडा) (उड़ीसा)	नागर शैली	नरसिंह देव गंग
4.	खजुराहो मंदिर (MP)	नागर शैली	चंदेल शासक
5.	कंदरिया महादेव मंदिर (खजुराहो - MP)	नागर शैली	धंग देव चंदेल
6.	कैलाश मंदिर (एलोरा - महाराष्ट्र)	बेसर शैली	राष्ट्रकूट वंश
7.	एलिफेंटा गुफा मंदिर (महाराष्ट्र)	बेसर शैली	राष्ट्रकूट वंश
8.	महाबलिपुरम के रथ मंदिर (तमिलनाडू)	द्रविड़ शैली	पल्लव वंश
9.	कैलाशनाथ मंदिर (कांची - तमिलनाडू)	द्रविड़ शैली	पल्लव वंश
10.	वृहदेश्वर (राजराजेश्वरम्) मंदिर (तंजौर - तमिलनाडू)	द्रविड़ शैली	राजराजा चोल

HC Choudhary - Mobile Apps

Scanned by CamScanner

11.	मीनाक्षी मदुरई मंदिर (तमिलनाडु)	द्रविड़ शैली	पांड्य वंश

साहित्य →

1. प्रियदर्शिका, नागानंद, रत्नावली → हर्षवर्द्धन
2. हर्षचरित, कादम्बरी → बाणभट्ट
3. न्यायवार्तिक → उद्योतकर
4. सूर्यशतक, मयूर शतक, सुभाषितावली → मयूर
5. शृंगार शतक, नीति शतक, वैराग्य शतक → भर्तृहरि
6. श्री भाष्य → रामानुजाचार्य
7. तमिल रामायण → कंबन
8. काव्य मीमांसा, कर्पूर मंजरी, बाल रामायण, बाल भारत, भुवनकोश, प्रबंधकोश, विद्धशाल भंजिका → राजशेखर (गुर्जर-प्रतिहार शासक महेन्द्रपाल का दरबारी)
9. कात्यानुशासन, कुमारपाल चरित → हेमचंद्र (चालुक्य शासक जयसिंह का दरबारी)
10. गीतगोविन्द → जयदेव (बंगाल के लक्ष्मण सेन का दरबारी)
11. आदिपुराण → जिनसेन सूरी (अमोघवर्ष का दरबारी)
12. कवि राजमार्ग → अमोघवर्ष
13. ललितविग्रह राज → सोमदेव (विसलदेव का दरबारी)

HC Choudhary - Mobile Apps

Scanned by CamScanner

14. हरिकेलि → बिसलदेव / विग्रहराज IV

15. विक्रमांकदेव चरित → विल्हण

16. मिताक्षरा → विज्ञानेश्वर

17. मत्तविलास प्रहसन → महेन्द्र वर्मन पल्लव

18. आयुर्वेद सर्वस्व, समरांगण सूत्रधार, कूर्मशतक → परमार राजा भोज

19. पृथ्वीराज रासौ → चन्द बरदई

20. पृथ्वीराज विजय → जयानक

21. नैषध चरित → श्री हर्ष

22. तहकीक - उल - हिंद (किताब - उल - हिंद) → अलबरूनी
(उसें 11 वीं सदी का भारत का आईना कहते है।)

HC Choudhary - Mobile Apps

Scanned by CamScanner